राज
कामिक्स विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 97
मृत्युजीत
भोकाल
एक ट्रेडिंग कार्ड मुफ्त

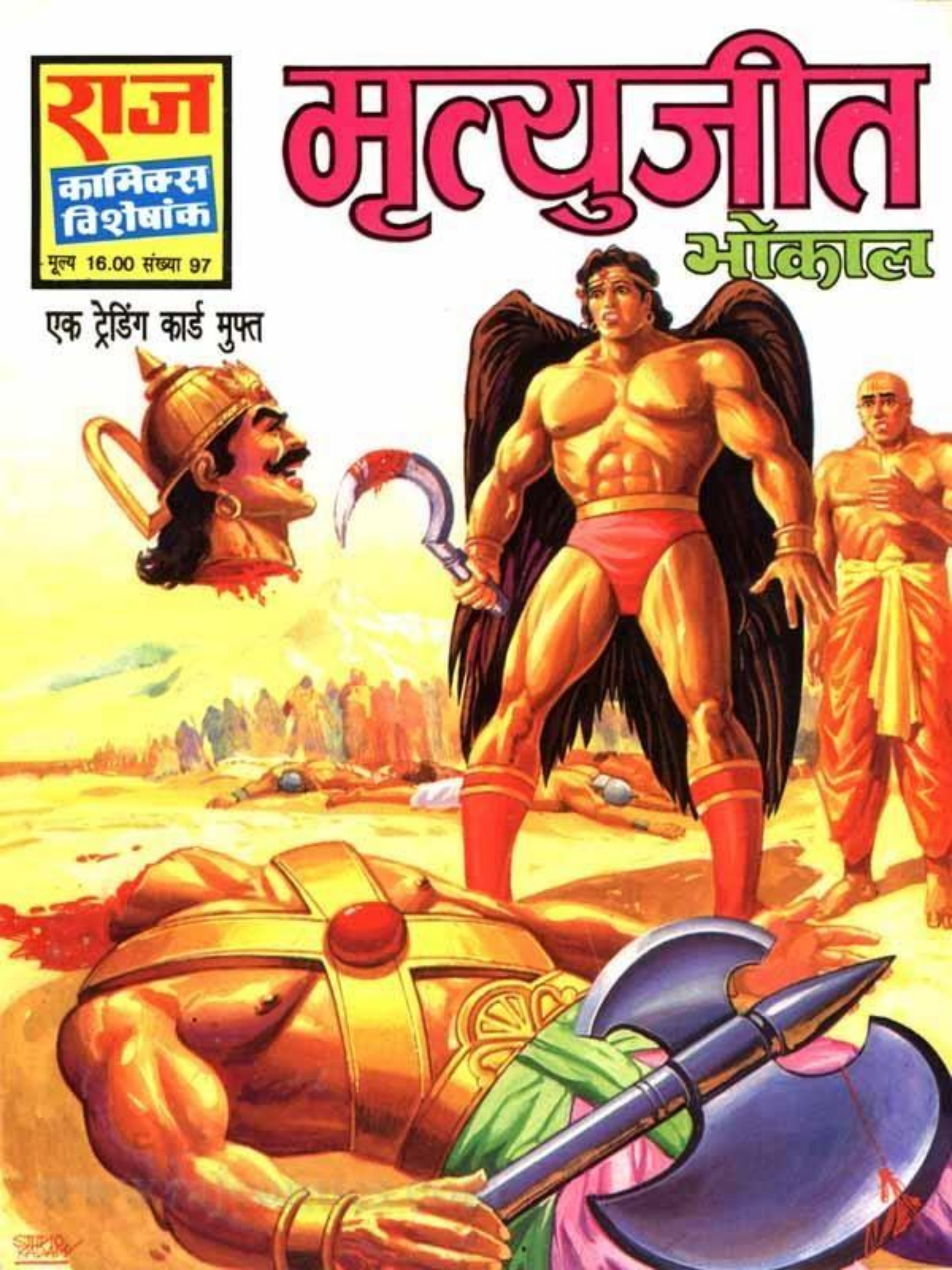

मृत्युजीत

• लेखक : संजय गुप्ता.
• सम्पादन : मनीष गुप्ता.
• चित्रांकन : कदम स्टुडियो.

अपने बाहुबल और वीरता से बड़े-बड़े युद्धों को जीत लेते हैं महाबली—

अपनी अत्यंत कठोर तपस्या और अद्वितीय सहनशक्ति से बड़ी से बड़ी शक्तियों पर विजय पा लेते हैं तपस्वी।

लेकिन एक शक्ति ऐसी भी है जिसे आज तक ना तो कोई धुरन्धर महाबली जीत पाया है और ना कोई पहुंचा हुआ तपस्वी और वह शक्ति है...

...मृत्यु-

और जब मृत्यु आती है तो आते हैं यमदूत—

मृत्युनगरी के राजा रक्षकुमार रक्षजीत उठो। तुम्हारा मृत्यु समय आ गया है। हम यमदूत तुम्हारे प्राण हरने आये हैं।

एक झटके से खुली रक्षकुमार रक्षजीत की आंखें क्रोध से लाल भभूका हो उठीं--

मानों ज्वालामुखी फूटा उसके मुख से—

रक्षजीत ने मरने के लिए जन्म नहीं लिया, इसलिए वह तुम्हारे साथ नहीं जायेगा!

जाओ वापस लौट जाओ।

©RAJA POCKET BOOK

यह घमण्डी राक्षस आसानी से हमारे साथ नहीं जाने वाला हमें बलपूर्वक हरने होंगे इसके...
...प्राण! आहह!
मैंने कहा ना वापस लौट जाओ!
अगर यमराज खुद भी आएगा तो वो भी ऐसी ही ठोकर खाकर जाएगा!
अपनी अभूतपूर्व शक्ति से यमदूतों को दूर उछाल कर–
आकाश को थर्रा देने वाला ठहाका लगाया रक्षजीत ने–
हा हा हा! मृत्यु रक्षजीत के पास भी नहीं फटक सकती!
ऐसा नहीं है दुष्ट रक्षजीत...

... बस पृथ्वी पर जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु आयेगी ही।
और तेरी मृत्यु को हम स्वयं लेकर आये हैं।
रक्षजीत का स्वर उपहास से भरा हुआ था—
जाओ धर्मराज! सीधी तरह तुम भी वापस चले जाओ नहीं तो मेरे प्राणों की जगह अपनी पराजय लेकर...
... यहां से वापस लौटोगे! ओह!
हमारे समक्ष इन बचकानी शक्तियों का प्रयोग छोड़ दुष्ट राक्षसपुत्र और...
... चल हमारे साथ।
भड़ाक
रक्षजीत की सीने से टकराती यमराज की गदा ने उसके सारे अस्तित्व को हिला डाला—

भैंसे की तरह डकराता वह दूर जा गिरा तो यमराज ने उसकी तरफ उछाल दिया वह मृत्युपाश—
इस मृत्युपाश में फंसकर तेरी आत्मा तेरे शरीर से बाहर आयेगी!
लेकिन मृत्युपाश रक्तजीत तक पहुंच पाता—
उससे पहले ही वहां के वातावरण को गूंजा गई रक्तजीत की वह पुकार—
महाकाल रक्षा करो!
दूसरे ही क्षण मानों वहां एक भयंकर तूफान आ गया—
और उसे चीरकर मृत्युपाश से आ टकराई वह प्रलय—
भगवान शिव का त्रिशूल! ओहह!
कड़ाक
टकराव इतना तीव्र था कि यमराज अपने वाहन पर बैठे ना रह सके—
और नीचे आ गिरे—
देखा धर्मराज! मैं ना कहता था कि मेरा जन्म समाप्त होने के लिए नहीं हुआ है। मैं तो सदा पृथ्वी पर जीवित रहूंगा...
...और अब ऐसा होने से तुम नहीं रोक सकते क्योंकि महाकाल शिव के त्रिशूल के कारण तुम्हारा मृत्युपाश कुछ समय के लिए बेकार हो चुका है और...

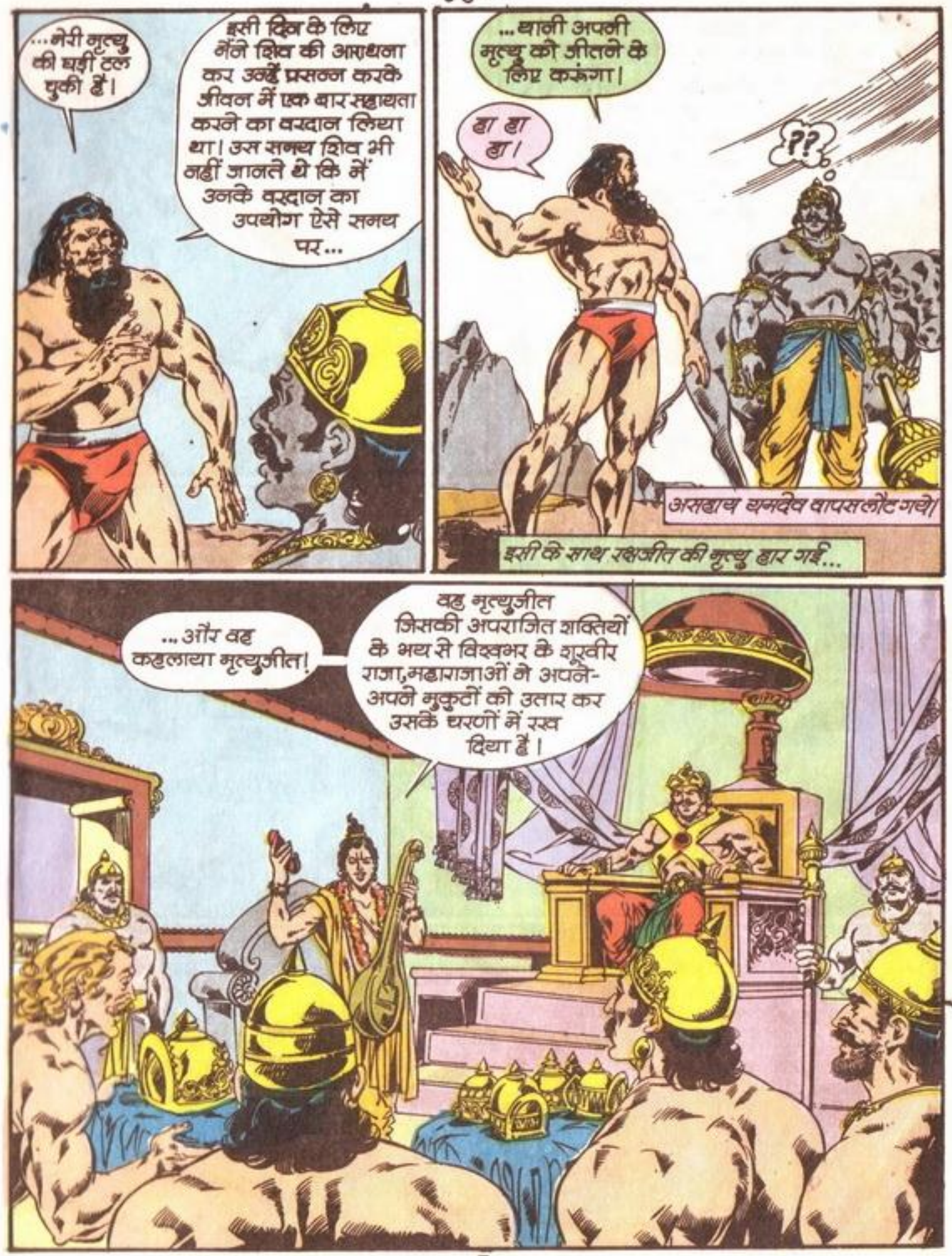
...मेरी मृत्यु की घड़ी टल चुकी है।
इसी दिन के लिए मैंने शिव की आराधना कर उन्हें प्रसन्न करके जीवन में एक बार सहायता करने का वरदान लिया था। उस समय शिव भी नहीं जानते थे कि मैं उनके वरदान का उपयोग ऐसे समय पर...
...यानी अपनी मृत्यु को जीतने के लिए करूंगा।
हा हा हा।
??
असहाय यमदेव वापस लौट गये।
इसी के साथ रक्तजीत की मृत्यु हार गई...
...और वह कहलाया मृत्युजीत!
वह मृत्युजीत जिसकी अपराजित शक्तियों के भय से विश्वभर के शूरवीर राजा,महाराजाओं ने अपने-अपने मुकुटों को उतार कर उसके चरणों में रख दिया है।

ऊंचे सिंहासन पर बैठे मृत्युजीत का सीना गर्व से और भी चौड़ा हो गया—
मात्र इतना ही बताकर चुप क्यों हो गये देवर्षि नारद! यहां उपस्थित राजा-महाराजाओं को यह भी तो बताओ कि कैसे हमने कामदेव को खदेड़ा था...
...कैसे एक ही मुष्टि प्रहार से हमने इन्द्र के वाहन ऐरावत को पछाड़ खाने के लिए विवश कर दिया था।
...कैसे विष्णु के गरूड़ को एक दिन के लिए बंदी बना लिया था।
...और कैसे देवताओं की भारी सेना पर अकेला ही भारी पड़ा था।
नारायण नारायण
हमें यह सब भी सचमुच यहां उपस्थित महाराजाओं को बताना चाहिए था...
...और साथ में यह भी बताना चाहिए था कि सारे ब्रह्माण्ड को समाप्त किया जा सकता है, लेकिन मृत्युजीत को नहीं।
हां देवर्षि! यह सब तुम्हें बताना चाहिए था, लेकिन कोई बात नहीं तुमने जितना भी बताया हम उससे बहुत प्रसन्न हैं...

... और इसके लिए हम चाहते हैं कि तुम हमारे पर्वताकार भाई कालकूट के शरीर से बने कभी ना समाप्त होने वाले इस सिंहासन पर विराजो!

नारद के अधरों पर खेलती नटखट मुस्कान और भी गहरी हो गई-

तीनों लोकों में घूमते रहने वाले हम जैसों को ना सिंहासन कभी भाये हैं और ना भायेंगे। ज्यादा देर कहीं ठहरना हमारी प्रवृत्ति के विरुध्द है। इसलिए हम चलते हैं, परन्तु जाते-जाते हम तुम्हें एक बात जरूर कहना चाहेंगे मृत्युजीत...

...इस भ्रम में मत रहना कि पृथ्वी पर जो आया है वह कभी समाप्त नहीं होगा। समय अवश्य लगता है परन्तु जो आया है उसे किसी ना किसी रूप में समाप्त होना ही है। एक दिन आयेगा जब पृथ्वी भी समाप्त होगी, उस पर मौजूद प्राणी भी समाप्त होंगे...

...तुम्हारा यह अभेद्य सिंहासन भी समाप्त होगा...

...और तुम भी समाप्त होगे।

नारायण नारायण

कहते हुए अपने होंठों पर वह रहस्यमयी मुस्कान लिये वहां से अन्तर्धान हो गए नारद मुनि-

और तब मृत्युजीत ने लगाया महल के जर्रे-जर्रे को हिला देने वाला वह ठहाका-

हा हा हा! मूर्ख है देवर्षि जो यह सोच रहा है कि मृत्यु को जीत लेने वाला मृत्युजीत समाप्त हो जायेगा और समाप्त हो जायेगा मेरे सर्वशक्तिमान छोटे भाई कालकूट के शरीर से बना...

... यह सिंहासन।

अरे!

ये एकाएक धरा में कम्पन कैसी हुई?

अचानक वहां हुई कम्पन के कारण बुरी तरह चौंका मृत्युजीत-

दूसरे ही क्षण आश्चर्य की अधिकता से कई हाथ ऊपर उछल गया-

नहीं!

भड़ाक

अभेद्य समझा जाने वाला उसका सिंहासन एक तेज आवाज के साथ सैकड़ों टुकड़ों में बिखर गया-

फटी-फटी आंखों से सिंहासन के टुकड़ों को निहार रहा था मृत्युजीत-

कालकूट के शरीर से बने इस सिंहासन के नष्ट होने का एक ही तात्पर्य है...

...कालकूट समाप्त हो गया।

मानों पागल हो गया मृत्युजीत–
कैसे हो गया यह?
मृत्युजीत पर बुरी तरह हॉवी हो गया क्रोध–
जब थोड़ी देर बाद शान्त हुआ तो उसके मस्तिष्क ने काम करना शुरू किया–
मेरे भाई कालकूट और उसकी सबसे बड़ी शक्ति कालभुजंग को मारने वाला वह मनुष्य कोई साधारण मनुष्य नहीं हो सकता...
...मुझे देखना होगा वास्तव में वह है कौन?
अपनी कई शक्तियों के साथ मृत्युजीत ध्यान लगाकर बैठ गया–
दूसरे ही क्षण भोकाल का विवरण उसकी आंखों के सामने नजर आने लगा–
उसका नाम है भोकाल–
ऋषि अखिलानन्द की पत्नी ने भोकाल को चीतापर्वत के पास से बेहोश अवस्था में उठाया और अपनी सेवा से ना सिर्फ उसे नया जीवन दिया बल्कि उसे दिव्यास्त्रों का पता भी दिया–
स्वस्थ होकर भोकाल उन दिव्यास्त्रों की खोज में निकल पड़ा–

और फिर अपनी बुद्धि अपने साहस के बल पर दिव्यास्त्रों को प्राप्त कर बन गया दिव्यास्त्र धारक—

फिर वह देवताओं का आशीर्वाद लेकर निकल पड़ा पृथ्वी को पाप के अवतार से मुक्ति दिलवाने—

और जा टकराया कालकूट की विध्वंसकारी काली शक्तियों से, लेकिन भोकाल मेना सिर्फ उन काली शक्तियों को मात दी...

...बल्कि कालभुजंग—

...और उसके पश्चात कालकूट को भी समाप्त करने में सफल हुआ—

और इस काम में देवता हनुमान ने उसका कदम-कदम पर सहयोग देने के साथ-साथ—
उसे संजीवनी बूटी की सहायता से नया जीवन दान भी दिया--

तभी भोकाल कालकूट को मारने में सफल हो गया।

अगले ही क्षण मृत्युजीत का रोंया-रोंया क्रोध की अधिकता से कांप उठा—
देवता भोकाल की सहायता कर रहे हैं तो करते रहें। उसके पास दिव्यास्त्र हैं तो होते रहें, लेकिन वह मृत्युजीत के हाथों हर दशा में मरेगा.
...तड़प-तड़पकर मरेगा।

... और उसे मारेगी मेरी नरकाग्नि...

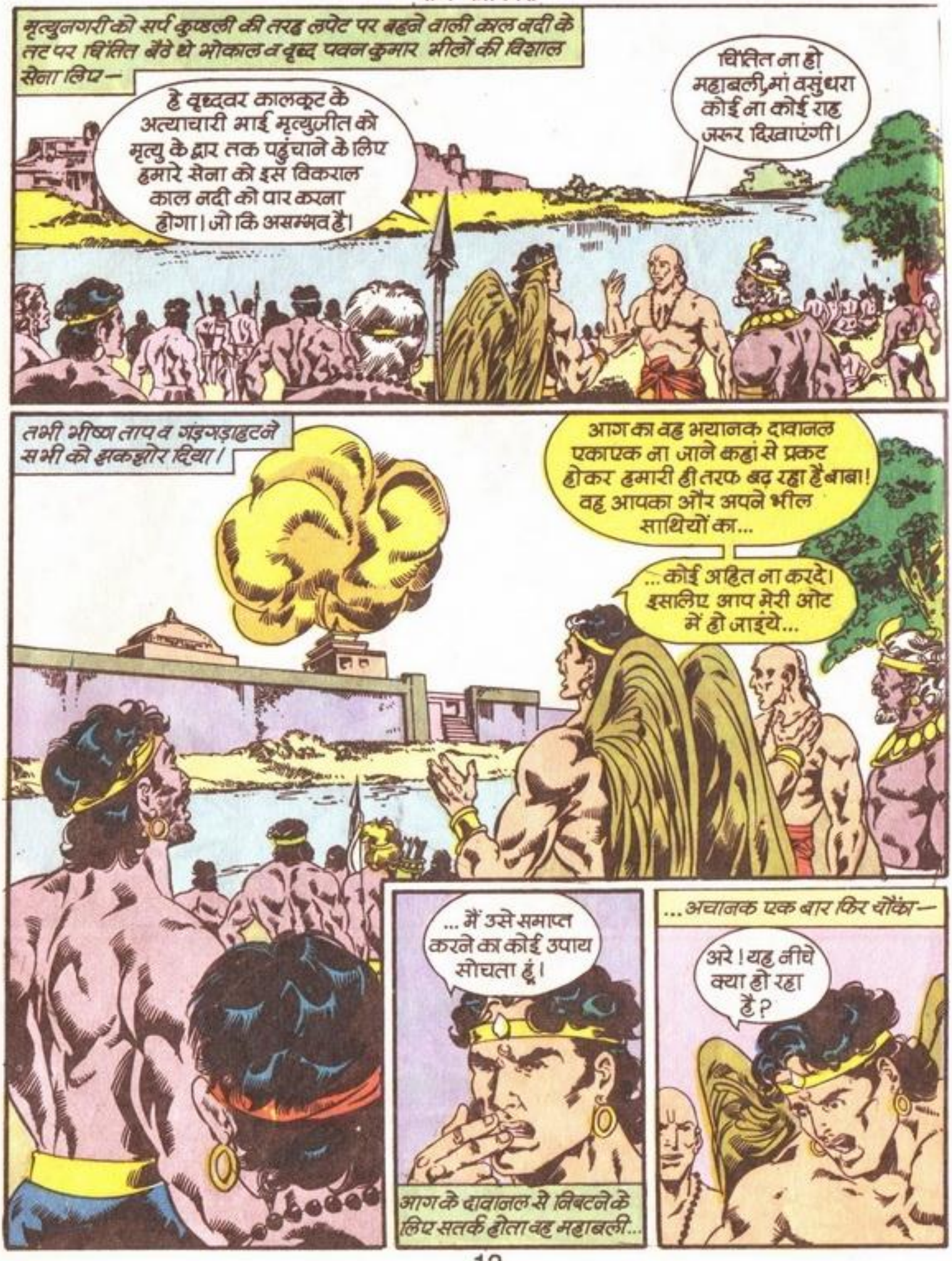
मृत्युनगरी को सर्प कुण्डली की तरह लपेट पर बहने वाली काल नदी के तट पर चिंतित बैठे थे भोकाल व वृद्ध पवन कुमार भीलों की विशाल सेना लिए—
हे वृद्धवर कालकूट के अत्याचारी भाई मृत्युजीत को मृत्यु के द्वार तक पहुंचाने के लिए हमारे सेना को इस विकराल काल नदी को पार करना होगा। जो कि असम्भव है।
चिंतित ना हो महाबली, मां वसुंधरा कोई ना कोई राह जरूर दिखाएंगी।
तभी भीष्म ताप व गड़गड़ाहटने सभी को झकझोर दिया।
आग का वह भयानक दावानल एकाएक ना जाने कहां से प्रकट होकर हमारी ही तरफ बढ़ रहा है बाबा! वह आपका और अपने भील साथियों का...
...कोई अहित ना करदे। इसलिए आप मेरी ओट में हो जाइंये...
... मैं उसे समाप्त करने का कोई उपाय सोचता हूं।
आग के दावानल से निबटने के लिए सतर्क होता वह महाबली...
...अचानक एक बार फिर चौंका—
अरे! यह नीचे क्या हो रहा है?

ये तो धरा का सीना फट रहा है...
... और हम उसमें समाते जा रहे हैं।
ओफ्फ!
... और क्षण भर में ही फिर पहले जैसी सामान्य हो गई—
खटाक
उड़ने के लिए भोकाल के पंख फड़-फड़ाने से पहले ही भोकाल, वृद्ध और भीलों को उस बड़ी दरार ने अपने में समेट लिया...

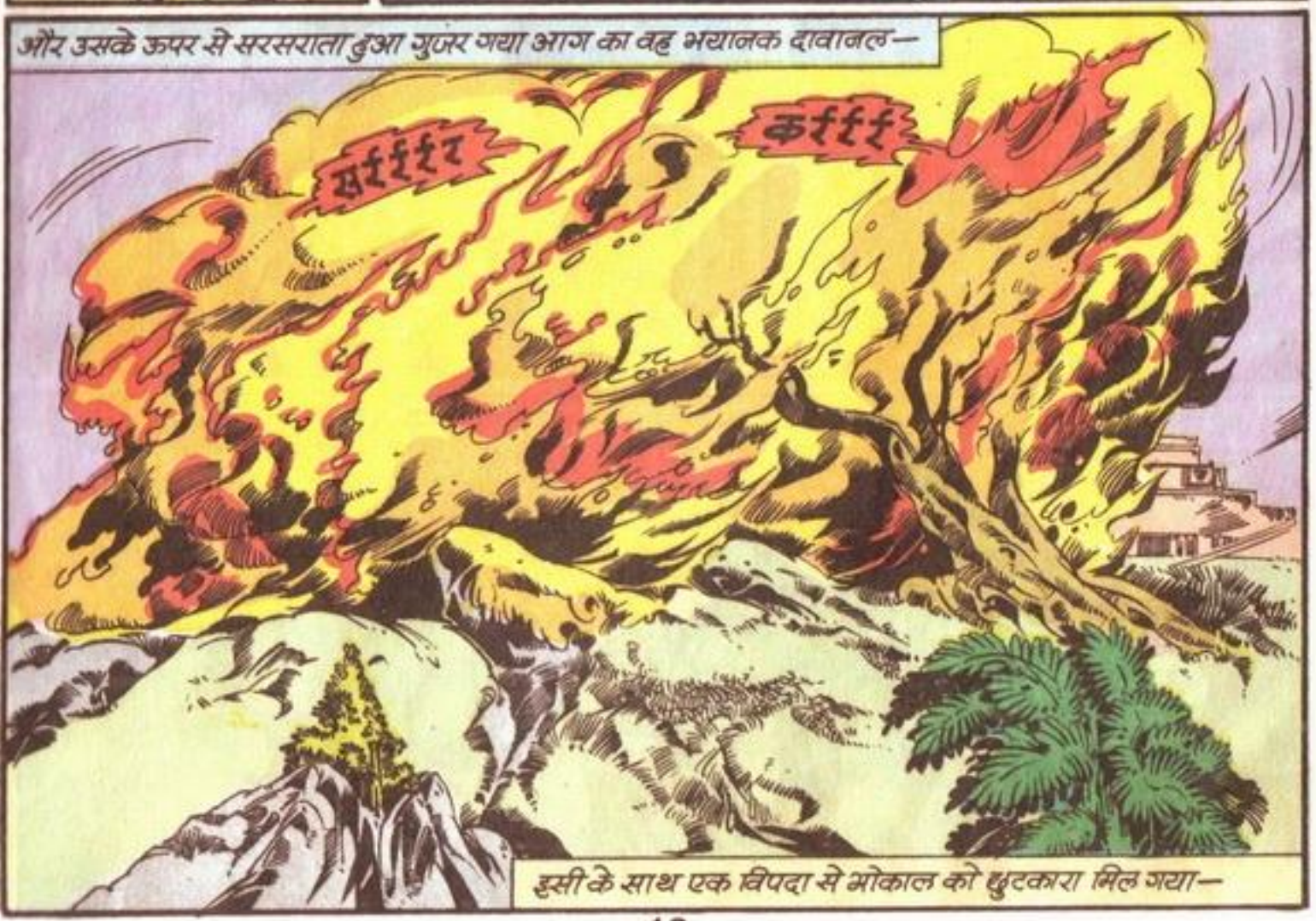
और उसके ऊपर से सरसराता हुआ गुजर गया आग का वह भयानक दावानल—
सर्रर्रर्र
कर्रर्र
इसी के साथ एक विपदा से भोकाल को छुटकारा मिल गया—

जबकि एक विपदा से छुटकारा पाने के लिए अब पूरी तरह सतर्क नजर आ रहा था भोकाल —

आग के दावानल के साथ-साथ धरा का एकएक फटना और हमारा उसमें गिरना इस बात का द्योतक है हम एक साथ कई विपदाओं में फंस गये हैं बाबा...

...परन्तु चिन्ता की बात नहीं। हर विपदा को धूल में मिलाकर भोकाल सभी को यहां से निकालकर ले जायेगा।

व्यर्थ ही भ्रम करने की बातें कर रहे हो महाबली...

...जबकि यहां से निकलने का रास्ता वो सामने दिख रहा है।

आओ।

और शरारती ढंग से मुस्कराते वृद्ध सभी को लेकर सामने दिखते रास्ते की तरफ बढ़ गये—

आश्चर्य है मैं तो समझ रहा था कि धरा का फटना किसी विपदा की निशानी है।

लेकिन अगर यह विपदा नहीं थी तो क्या थी?

तुम्हें भयंकर नरकाग्नि से बचाने का धरती मईया का प्रयास...

...जो पूरी तरह सफल हुआ! और इसी के साथ तुम सब कालनदी के पार आ पहुंचे हो

नारद मुनि!

तीनों लोकों की प्रत्येक गति विधियों पर नजर रखने वाले नारद मुनि के प्रकट होते ही भोकाल उनके चरणों में जा गिरा—

प्रणाम स्वीकार कीजिए देवर्षि।

आयुष्मान भव मनुष्य श्रेष्ठ महाबली।

उठो।

मैं भी देवर्षि के चरण स्पर्श करके अपना जीवन धन्य कर लूं।

मुस्कराते हुए वृद्ध नारद के चरणों की तरफ बढ़ते...

...उससे पहले ही नारद मुनि प्रणाम की मुद्रा में झुक गये—

आपको हमारे आशीर्वाद की नहीं हमें आपके आशीर्वाद की आवश्यकता है वृद्धवर।

!!

एक देव द्वारा मनुष्य को प्रणाम भोकाल को आश्चर्य चकित कर देने वाला था—

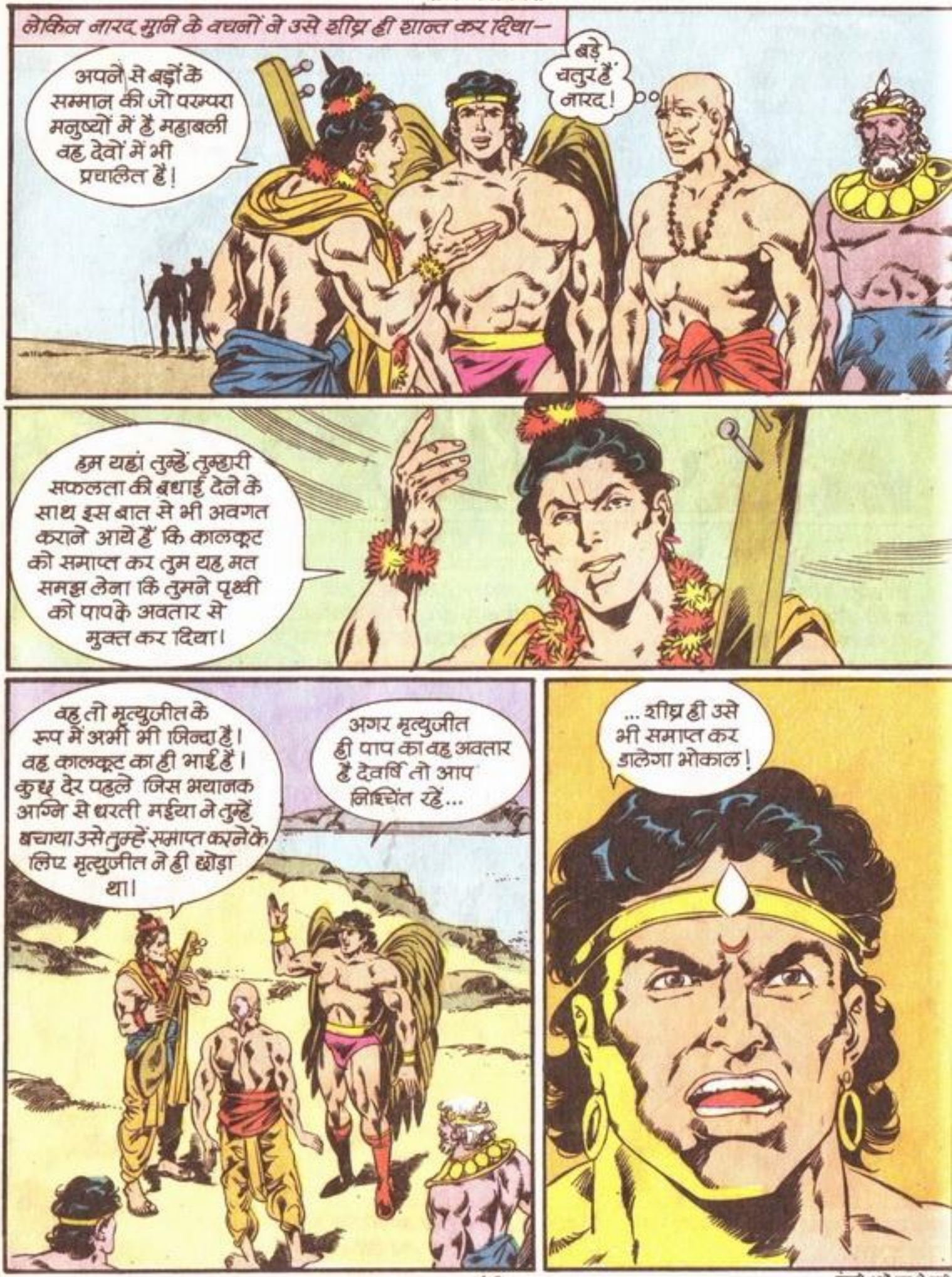

कहानी 19वें पृष्ठ से जारी

हमें तुम्हारी वीरता और साहस पर विश्वास है महाबली, परन्तु फिर भी उस मृत्युजीत को जीतना तुम्हारे लिए आसान ना होगा जिसने साक्षात् मृत्यु को जीता हुआ है...

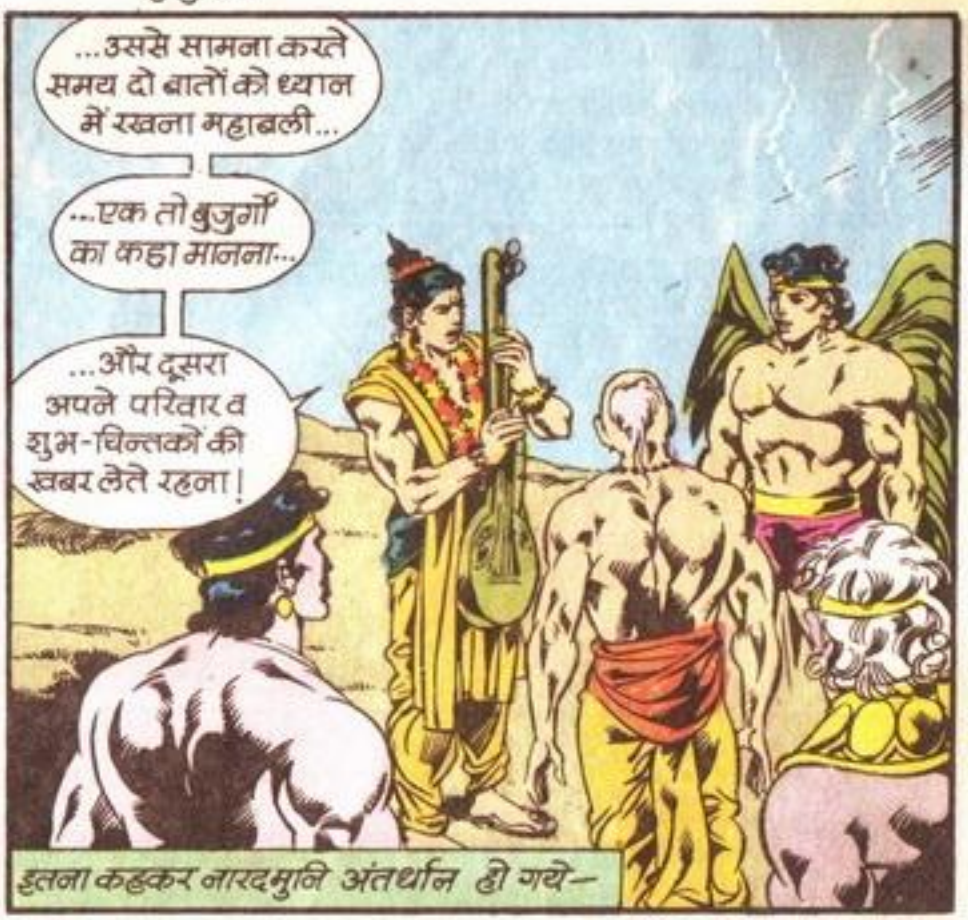
...उससे सामना करते समय दो बातों को ध्यान में रखना महाबली...
...एक तो बुजुर्गों का कहा मानना...
...और दूसरा अपने परिवार व शुभ-चिन्तकों की खबर लेते रहना!
इतना कहकर नारदमुनि अंतर्धान हो गये—

कालकाल को स्तब्ध खड़ा छोड़कर—
देवर्षि अपने अन्तिम शब्दों में मुझे कुछ समझा गये हैं या चेतावनी दे गये हैं?
उनके शब्दों में सदा कोई ना कोई बड़ा रहस्य छिपा रहता है महाबली, इसलिए तुम्हें उनके शब्दों पर अमल करना ही चाहिए।

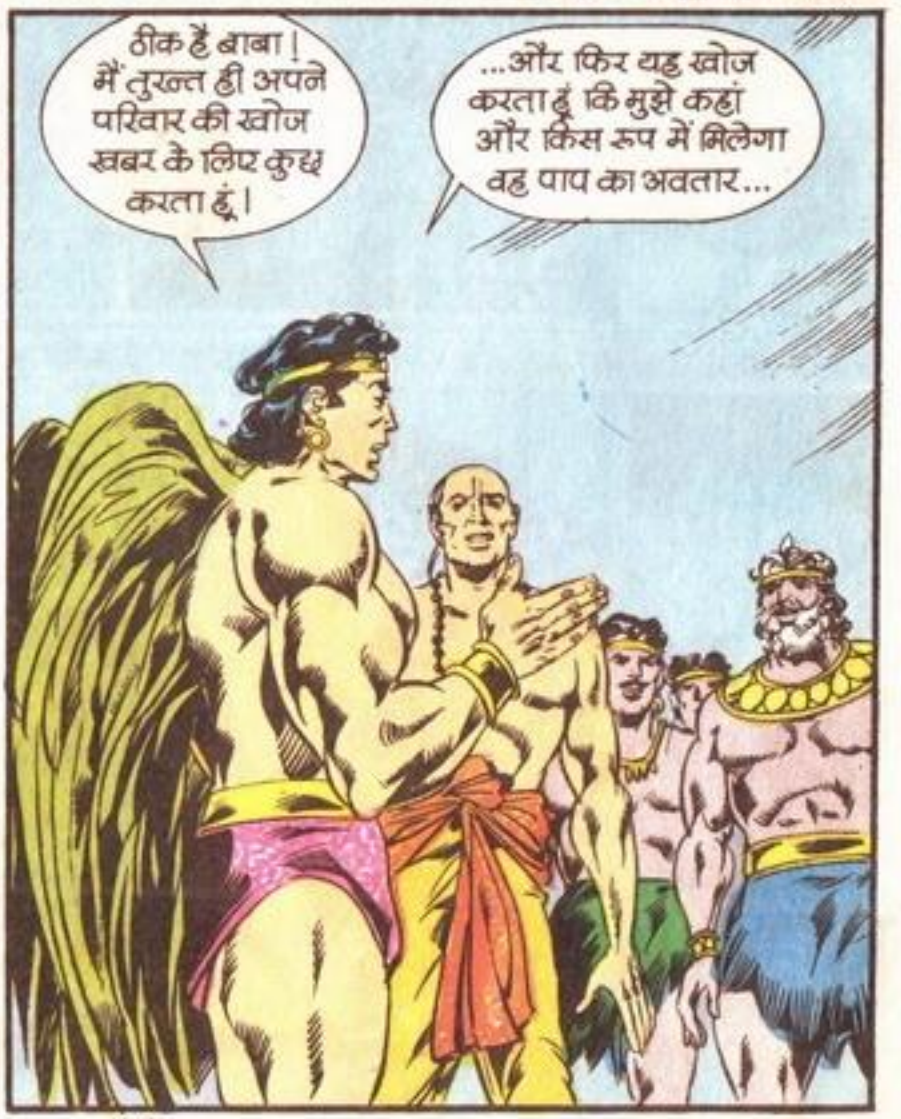
ठीक है बाबा! मैं तुरन्त ही अपने परिवार की खोज खबर के लिए कुछ करता हूं।
...और फिर यह खोज करता हूं कि मुझे कहां और किस रूप में मिलेगा वह पाप का अवतार...

...मृत्युजीत...!!
भोकाल को मारना उतना आसान नहीं जितना मैं समझ रहा हूं।...
...उसे समाप्त करने के लिए मुझे कुछ और ही सोचना होगा।...
...कुछ ऐसा कि भोकाल भी मर जाये और मेरी लाठी भी ना टूटे।
जमाने भर की धूर्तता और छल अब मृत्युजीत के चेहरे पर आ विराजा था—

विकास नगर—
वह नगरी जिसने भोकाल जैसे परे को अपने मोह के बंधन में बांधकर सदा के लिए अपनी ही धरती पर रहने के लिए विवश कर दिया—
विकास नगर की भूमि को अपनी कर्मभूमि मानने वाला भोकाल कभी यहां अकेला आया था—

लेकिन आज यहां ना सिर्फ उसके सैकड़ों शुभचिन्तक हैं बल्कि उसका परिवार भी है—
आज मेरी पीठ पर बैठकर खूब सैर कर लो बच्चुओं, जब भोकाल चाचा लौटकर आयेंगे तो उनकी पीठ पर ऐसे ही बैठकर मैं सारा हिसाब चुक्ता कर लूंगा।

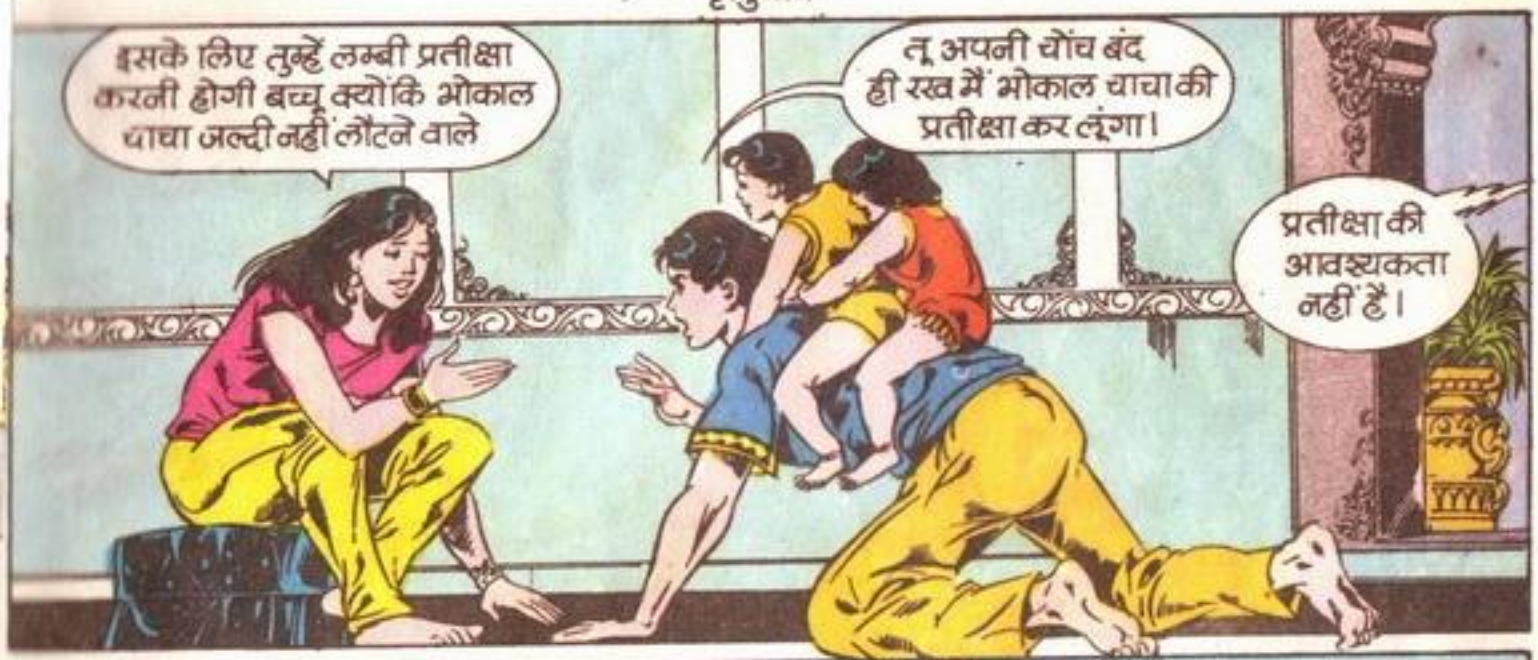
इसके लिए तुम्हें लम्बी प्रतीक्षा करनी होगी बच्चू क्योंकि भोकाल चाचा जल्दी नहीं लौटने वाले
तू अपनी चोंच बंद ही रख मैं भोकाल चाचा की प्रतीक्षा कर लूंगा।
प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं है।

... मैं आ गया हूं।
भोकाल चाचा
स्वामी!
सभी खुशी से झूम उठे थे भोकाल को देखकर –

भोकाल भी कम खुश ना था –
बहुत दिनों तक तुम सबसे दूर रहा हूं इसलिए मैं अब ज्यादा से ज्यादा समय तुम्हारे साथ गुजारकर...

...तुम सबकी शिकायतें दूरकर देना चाहता हूं।
अगर ऐसा है तो चलिए हम सब उद्यान में चलकर खेलते हैं।

चलो आज हम सब उद्यान में चलकर सैर सपाटा करेंगे।

मंत्रमुग्धसे वे रथ पर सवार हो गये-

भोकाल के हाथों से निकला वह भभूत का गुबार सभी के नथुनों से टकराया...

...और उन्हें अचेत करता चला गया—

हा हा हा! सभी की चेतना लुप्त हो गई है...

...अब इस रथ को जमीन पर नहीं...

...आकाश में दौड़ना चाहिए। क्योंकि मुझे इन्हें लेकर स्वामी मृत्युजीत के पास जल्द से जल्द पहुंचना है।

हा हा हा

भोकाल का रूपधर कर उस राक्षस ने भोकाल के शुभ-चिन्तकों का हरण कर लिया—

और उन्हें लेकर जा पहुंचा मृत्युजीत के सामने—

शाबाश रक्षवीर! तुमने इन्हें यहां लाकर बहुत बड़ा काम किया है।

इन्हें ऐसी जगह पहुंचा दो जहां इन तक भोकाल की आत्मा भी ना पहुंच सके।

अब मैं देखता हूं मुझसे और अपनी मौत से बचकर कहां जाते हैं...

... भोकाल और उसके साथी–
सामने से वह धूल का बड़ा गुबार सा कैसा उठ रहा है?
सावधान साथियो! धूल के इस गुबार के उठने का मतलब मैं खूब समझता हूं। ऐसे गुबार तभी उठते हैं जब शत्रु को कुचलने का इरादा लेकर आगे बढ़ती है कोई...
...विशाल सेना।
उन्हें सामने आने दीजिए महाबली, फिर देखिए कौन किसे रौंदता है।
कुछ ही देर बाद दोनों सेनाएं आमने-सामने थीं–
तेरा विनाश बहुत जल्दी तुझे मेरे सामने ले आया मृत्युजीत!
मूर्ख भोकाल! विनाश मेरा नहीं तेरा आया है। मैंने तो अपना गुलाम बना रखा है विनाश को...
...और यह बात तुझे तब पता चलेगी...

...जब इस रणभूमि का जर्रा-जर्रा तेरे और तेरे साथियों के लहू से रंगा नजर आयेगा।

आक्रमण!

इधर मृत्युजीत चीखा—

और इधर भील राज—

आगे बढ़ो साथियो! एक भी शत्रु जीवित वापस नहीं लौटना चाहिए!

कुछ ही क्षणों में दो सेनाएं आपस में भिड़ गईं—

और दोनों का लक्ष्य था अपने शत्रु का विनाश—

महाबली भोक्रल और मृत्युजीत का लक्ष्य भी यही था—

असंख्य काली शक्तियों से भरा यह फरसा कुछ ही पलों में तेरे शरीर को कई टुकड़ों में बांट देगा।

ओह!

ओफ्फ!
इस तरह तुम ज्यादा समय तक मृत्युजीत कीकाली शक्तियों से बचे नहीं रह सकते महाबली...
... किसी उचित दिवास्त्र का प्रयोग करो।
आप सही कह रहे हैं बाबा! मुझे दिव्यास्त्र का प्रयोग करना ही होगा...
...और इसके लिए एकदम उपयुक्त रहेगी काली मां की खड्ग।
एक क्षण में ही काली मां की प्रलयंकारी खड्ग भोकाल के हाथ में थी –

अब ना भोकाल के लिए अपना बचाव करना मुश्किल था-

और ना प्रहार करना—

यह काली मां की वह प्रलयंकारी खड्ग है दुष्ट...

...जो बड़ी से बड़ी शक्तियों का पल भर में ही संहार करने की ही नहीं...

खड़ाक

...तुझ जैसे पापियों का नाश करने की क्षमता भी रखती है!

स्वच्चाक

भोकाल ने फुर्ती से लपककर उड़ा दी मृत्युजीत की गर्दन—

इसी के साथ समस्त रणभूमि में मानो सन्नाटा छा गया!

लेकिन यह सन्नाटा मात्र एक पल ही छाया रहा—

क्योंकि अगले ही क्षण मृत्युजीत के कटे सिर से उबल पड़े उस ठहाके ने सन्नाटे के कलेजे को चीर दिया—
हा हा हा। मेरे शीश को काटकर प्रसन्न मत हो मूर्ख भोकाल! क्योंकि इस शीश के कटने का मतलब यह नहीं है कि...
... मर गया वह जिसने मृत्यु को जीता हुआ है।
हा हा हा
!!!
देखने वालों को आश्चर्य चकित करता मृत्युजीत का शीश ठहाके लगाता हवा में लहराया—
...और जाकर अपने धड़ से जा जुड़ा-
हा हा हा। मेरा शीश मेरे धड़ से जुड़ गया है भोकाल! आगे बढ़कर इसे फिर काटा मेरे शीश के बार-बार कटने से मुझे ही लाभ है...
...क्योंकि ब्रह्मा से मैंने वरदान लिया हुआ है कि जितनी बार मेरा शीश कटेगा उतनी बार मेरी शक्ति बढ़ती जायेगी।
इसका शीश काटना तो मूर्खता होगी। इसे समाप्त करने के लिए मुझे कुछ और ही...

...सोचना होगा। इसलिए काली मां की इस खड्ग की अब मुझे आवश्यकता नहीं है।

तुरन्त ही भोकाल के हाथों से खड्ग अदृश्य हो गई।

इसी के साथ ठहाका लगाते मृत्युजीत ने कर दिया अपना वार—

मुझे इसी की प्रतीक्षा थी किंतु अपने हाथ से खड्ग छोड़े और मैं तुझे नाग देवता वासुकि से प्राप्त इस नागपाश में जकड़ डालूं...

...जिससे कोई भी मनुष्य मृत्यु के पश्चात ही छूट सकता है।

वह अपने आपको नागपाश में फंसने से बचा नहीं सका—

लेकिन नागपाश में फंसने वाला वह अकेला ही नहीं था वृद्ध भी उसके साथ फंसा था—

ओह! यह तो बहुत बुरा हुआ बाबा! संयोग से आप भी मेरे साथ नागपाश में फंस गये!

लेकिन आप घबराइये नहीं क्योंकि ऐसे क्षणों में जो अपना संयम खो देते हैं...

...वह अपना जीवन भी खो देते हैं।
और जो ऐसे में अपना सयंम बचा लेते हैं।...
...वे अपना जीवन भी बचा लेते हैं।
शायद तुमने ठीक कहा महाबली! लगाओ और शक्ति लगाओ।
मुझे लगता है कि तुम अपनी असीमित शक्ति से इस नागपाश को शीघ्र ही...
...तोड़ डालोगे!
जल्द ही कई टुकड़ों में टूटकर गिरा नाग पाश—

इसी के साथ वृद्ध भेदभरी मुस्कान के साथ मुस्करा उठा—
वाह महाबली, वाह! तुमने इस नागपाश को तोड़कर एक बार फिर अपने आपको महाबली सिद्ध कर दिया।
धन्यवाद बाबा!
अपने आपको संभालता भोकाल वृद्ध की जिस मुस्कान का रहस्य नहीं समझ पा रहा था...

...उसे खूब समझ रहा था मृत्युजीत—
नागपाश भोकाल की शक्ति से नहीं हनुमान की शक्ति से टूटा है। हनुमान जानता था कि भोकाल नागपाश को कदापि नहीं तोड़ पायेगा इसलिए उसने स्वयं को भी भोकाल के साथ नागपाश में फंसा लिया था।

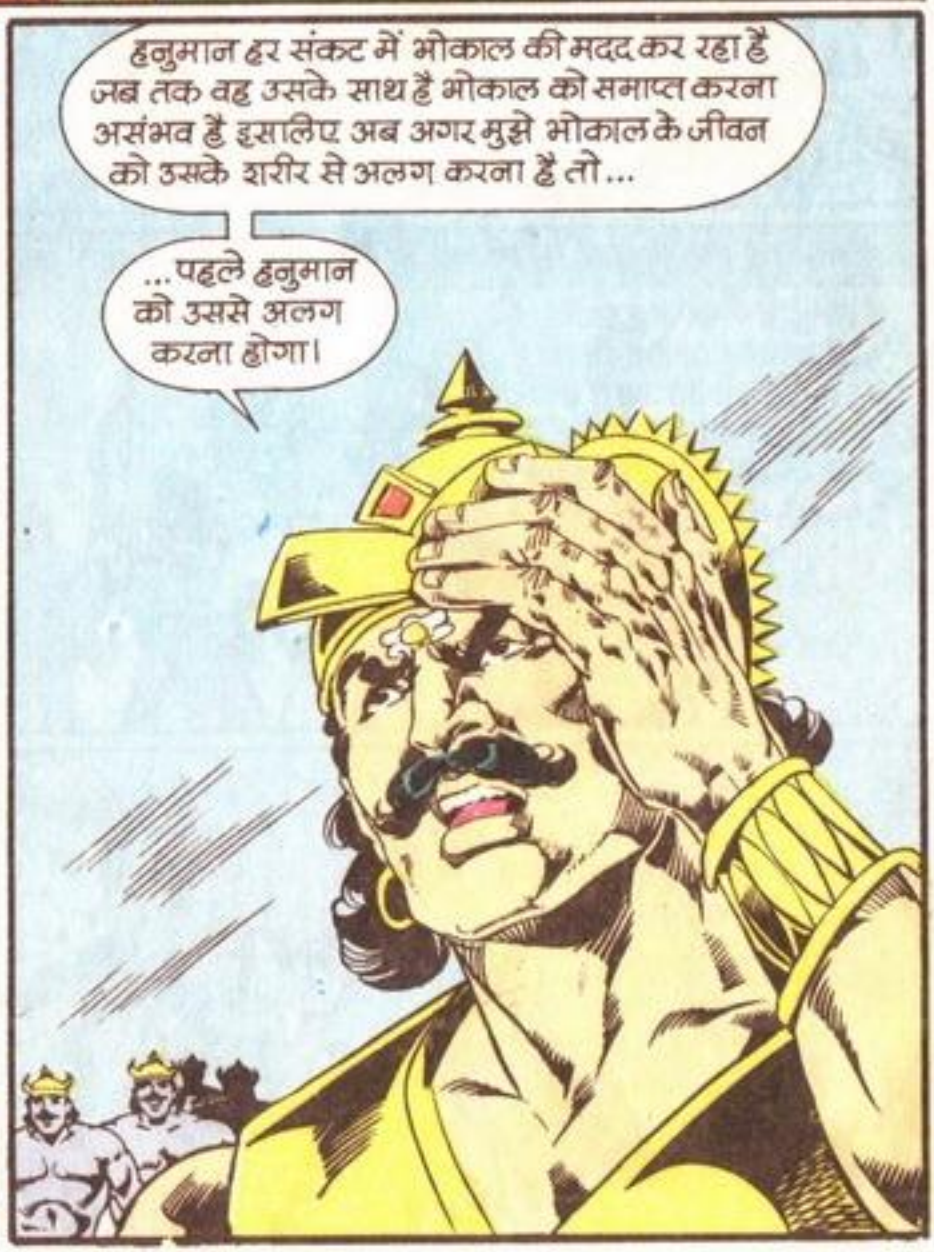
हनुमान हर संकट में भोकाल की मदद कर रहा है जब तक वह उसके साथ है भोकाल को समाप्त करना असंभव है इसलिए अब अगर मुझे भोकाल के जीवन को उसके शरीर से अलग करना है तो...
...पहले हनुमान को उससे अलग करना होगा।

... और उसके लिए मुझे प्रयोग करना होगा।
ब्रह्मास्त्र!

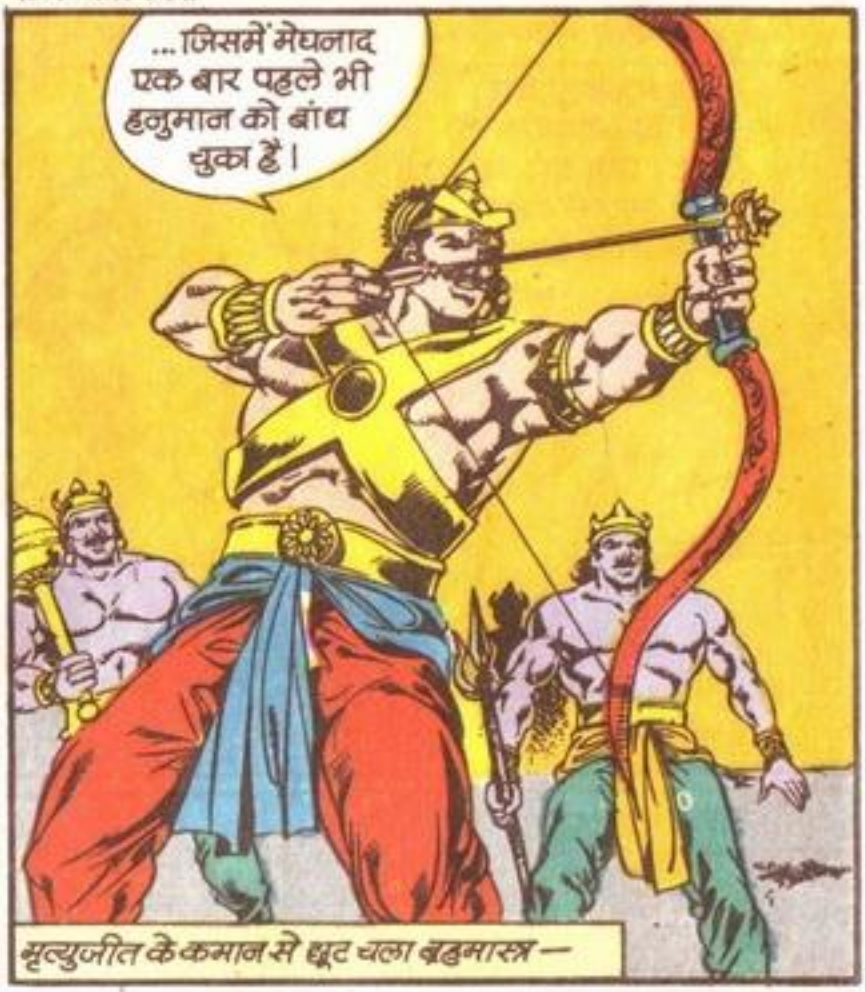
...जिसमें मेघनाद एक बार पहले भी हनुमान को बांध चुका है।
मृत्युजीत के कमान से छूट चला ब्रह्मास्त्र —

इसी के साथ वृद्ध के चेहरे पर चिन्ता की गहरी रेखाएं नजर आने लगीं —
उस दुष्ट ने जान बूझकर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया है। अगर भोकाल को उससे बचायेंगे तो हम स्वयं फसेंगे और स्वयं को बचायेंगे तो भोकाल मरेगा।...

... और भोकाल जैसे श्रेष्ठ मनुष्य का बाल भी बांका हो यह हमें कतई स्वीकार नहीं।
वृद्ध के हाथ के हल्के से इशारे के साथ ही आस-पास धूल का बवंडर सा उठ खड़ा हुआ —

कोई नहीं जान पाया कि वह बवण्डर क्यों आया और—

उसमें क्या घटित हो गया...

ब्रह्मास्त्र बजरंगबली की छाती से टकराया...

... और उन्हें अपने साथ लेकर दूर उड़ता चला गया—

धूल के बवण्डर के हटने के बाद जहां भोकाल आश्चर्यचकित हुआ वहीं खुशी से उछल पड़ा मृत्युजीत—

बाबा! अभी यहीं थे; कहां चले गये वे?

वह बूढ़ा अब कभी वापस नहीं लौटने वाला भोकाल इसलिए उसकी चिन्ता छोड़...

... और अपने उन प्राणों की चिन्ता कर जो अभी तेरे शरीर का साथ छोड़ने वाले हैं।

ओह!

श्रीराम का नाम होंठों पर आते ही भोकाल के हाथों में आया श्रीराम का वह धनुष...

...तू ऐसा चमत्कार नहीं कर सकता...
...और राम मुझे मिले वरदान की वजह से तुझे बचाने नहीं आ सकता!
हा हा हा
अब मृत्यु उस श्रेष्ठ मनुष्य के एकदम सामने खड़ी थी क्यों कि वह एक ही तीर से सात निशाने नहीं लगा सकता था—
और श्रीराम भोकाल की सहायता ना करने के लिए बाध्य थे—
लेकिन फिर भी वे सातों निशाने उस एक ही बाण के शिकार हुए—
जो छूटा था उस धनुर्धारी के धनुष से जो बचपन से आज तक धनुष बाण से ही खेलता आया था—
और वह धनुर्धारी था भील श्रेष्ठ धनुषा—
...बल्कि शत्रुओं को आगे बढ़ने से रोकने का प्रबंध भी किया-
ओह! ये बाणों की दीवार!
धनुषा ने अपने चमत्कारी बाणों से मात्र भोकाल को ही नहीं बचाया...

आगे बढ़ जाओ इस तिनकों की दीवार को तोड़कर।

तड़ाक

बाणों की उस दीवार को तोड़ने में भला राक्षसों को क्या देर लगनी थी।

लेकिन उस दीवार को पार करके वे सभी धनुषा के पास पहुंच पाते...

उससे पहले ही धनुषा का बाण धरती में समाता चला गया—

अगले ही क्षण धरती का सीना फाड़कर निकला वह दहकता लावा—

जिसने आगे बढ़ते राक्षसों के पांवों को रुकने के लिए मजबूर कर दिया—

ओह! यह दहकता लावा।

बचो इससे जो भी इसकी चपेट में आया उसकी खैर नहीं।

लावे ने राक्षसों को तब तक रोके रखा...

जब तक सूर्य ने अस्त होकर युद्ध-विराम की घोषणा ना कर दी—

इसी के साथ दोनों सेनाएं वापस लौट पड़ीं—

आज तो अपने पैरों से चलकर वापस लौट जाओ दुष्टो! कल धनुषा का कहर तुम्हें अर्थी पर लौटायेगा।

आज का युद्ध समाप्त हो चुका था—

अब अगले दिन की रणनीति बनाने में व्यस्त था मृत्युजीत—

गहरी सोच में डूबा हुआ—

तभी ममता भरे उस हाथ ने मृत्युजीत को चौंकाया—

तेरा इस तरह लेटना और मुखमंडल पर मौजूद भाव बता रहे हैं कि किसी परेशानी ने तुझे बुरी तरह चिन्तित कर रखा है पुत्र।

मां! तुम यहां कैसे?

तेरी चिन्ता का कारण जानने के लिए।

चिन्तित और मैं। वह जिसने अपने काल पर विजय पाई हुई है।

नहीं मां, नहीं। तेरा यह लाल किसी भी दशा में चिन्तित नहीं हो सकता।

अपनी जननी से छिपाने का प्रयत्न मत कर मेरे लाल! मैं तेरी विचलता का कारण खूब समझती हूं।...

... और वह कारण है मनुष्य श्रेष्ठ भोकाल के साथ होता तुम्हारा युद्ध!

इस युद्ध में तुम्हें किसी की सहायता की आवश्यकता है।

... मैंने ठीक कहा ना।

नहीं मां! मृत्युजीत को किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं। वह जब चाहे भोकाल जैसे सैकड़ों को चींटी की तरह मसल दे।

देखना मां! उसे भी वैसे ही मसल दूंगा।
मुझे तुम्हारी शक्ति पर भरोसा है पुत्र, लेकिन फिर भी एक भाई दूसरे भाई की सहायता करे तो उसमें बुरा ही क्या है?

तू किस भाई की बात कर रही है मां?

उत्तर देने के स्थान पर मुस्कराई वह राक्षसी—
जानता है भोकाल, तेरे जैसे वीर और शक्तिशाली के लिए परेशानी का कारण क्यों बना हुआ है?
वह स्वयं पुण्य आत्मा तो है ही उसकी सहायता करने वाले भी पुण्यात्मा ही हैं। इसलिए...

... तेरे लिए उसे समाप्त करना इतना आसान ना होगा। उसे तो हमारी ही जाति की कोई ऐसी शक्ति समाप्त कर सकती है जो स्वयं पुण्य आत्मा हो।
हमारी राक्षस जाति में पुण्य आत्मा मिलना तो असंभव है मां!

नहीं! हमारी जाति में भी एक पुण्यात्मा है मृत्युजीत! संयोग से वह मेरी बड़ी बहन का पुत्र और तुम्हारा मौसेरा भाई है...
...और वह है क्रूरों का क्रूर!

...अतिक्रूर!
ओह! यह किसने पुकारा मुझे!

...मैंने। मुझे तुम्हारी आवश्यकता है पुत्र अतिक्रूर! आओ मेरे पास!

!!

आश्चर्यचकित सा उस शक्ति में फंसकर वहां से गायब हुआ अतिक्रूर—

...कुछ देर बाद जहां पहुंचा वहां उसे स्तब्ध कर देने वाला दृश्य मौजूद था—

मां...! परन्तु यह कैसे हो सकता है। मेरी मां का देहांत तो मेरी आंखों के सामने ही हो गया था। तो फिर आप जीवित कैसे?

सही कहा पुत्र! तुम्हारी मां का वास्तव में देहांत हो गया था। मैं तो उसकी जुड़वां बहन हूं।

राक्षस जाति की होते हुए भी वह बचपन से ही राक्षस प्रवृत्तियों और राक्षसी कृत्यों से घृणा करती थी इसीलिए उसने तुम्हारे पिता चंडाल कपालफोड़ से प्रेम विवाह करके राक्षस नगरी सदा के लिए त्याग दी।

लेकिन फिर भी यह नगरी तुम्हारी जननी की मातृभूमि तो है न। और आज उसकी यह मातृभूमि संकट में है। मैं चाहती हूं इसे बचाने में तुम मेरे पुत्र और अपने भाई मृत्युजीत की सहायता करो।...

...इसलिए मैंने तुम्हें यहां बुलाया है।

आपकी प्रत्येक बात सत्य है। लेकिन यह भी सत्य है कि एक बार यहां से जाने के बाद मेरी मां को ना तो कभी इस भूमि ने स्वीकार किया और आप सबने मेरे पिता के साथ वे जब भी यहां आईं उनका अपमान किया।...

...इसलिए मुझे इस धरती पर और आप पर आये संकट से कोई सरोकार नहीं है

...मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर सकता।

अतिक्रूर चलने को हुआ तो—

उसे रोककर ममता के लबालब भरे स्वर में बोली वह राक्षसी-

मैंने तुम्हारे समक्ष एक प्रस्ताव रखा था। तुमने नहीं माना, इसका मुझे कतई दुःख नहीं है परन्तु तुम मेरी प्रिय बहन की अन्तिम निशानी हो। मैं चाहती हूं कि तुम दूर रहकर भी मेरे पास रहो इसलिए...

...मौसी होने के नाते इतनी प्रार्थना करती हूं कि तुम मेरी यह मुद्रिका अपने पास रख लो। यह सदा तुम्हें मेरी याद दिलाती रहेगी।

आपकी इतनी छोटी सी बात भी भला मैं क्यों नहीं मानूंगा।

लाइए मुद्रिका।

अतिक्रूर ने वह मुद्रिका ले ली—

और अपनी उंगली में पहन ली—

इसी के साथ अतिक्रूर एक झटके से वहां से अदृश्य हो गया-

बड़ा आया था मृत्युजीत की सहायता करने वाला। पीठ दिखाकर चला गया।

उत्तर में मृत्युजीत की मां के कंठ से गूंजा वह ठहाका—

हा हा हा! वह तुम्हारी सहायता करेगा पुत्र! कहीं भी चला जाये, लेकिन कल वह युद्ध के समय लौटेगा।...

....जरूर लौटेगा...

"... तुम्हारे शत्रुओं पर प्रलय ढहाने के लिए-"

घायल भोकाल को विश्राम की आवश्यकता है। आज रणभूमि में मुझे अपना जौहर दिखाना है।

रणभूमि में विजयी होने का अरमान लेकर तो आया था धनुषा--

लेकिन क्या जानता था वह कि आज सभी के अरमानों को धूल में मिलाने के लिए वहां पहुंच गया था क्रूर सम्राट अतिक्रूर-

इन सरकण्डों से खेलना बंद कर बच्चे...

...और मृत्यु से खेलने की तैयारी कर!

भड़ाक

दतांक के भीषण प्रहार से दूर उछला धनुषा...

...पलक झपकते ही सम्भला--

मृत्यु से हर समय खेलता रहा हूं धनुषा, लेकिन वह मृत्यु तुम जैसे दुष्टों की होती है।

धनुषा द्वारा छोड़े बहुत से बाण अतिक्रूर का काल बनकर उसकी तरफ बढ़े--

लेकिन जब तक दतांक है उसके हाथ में तब तक कोई भी मुसीबत भला कैसे उस तक पहुंच जाये-

और यह बात धनुषा भी समझ गया-

तुझे समाप्त करने के लिए तेरे हाथ में थमे अस्त्र को ना सिर्फ तेरे हाथ से छुड़ाना है...

... बल्कि उसे समाप्त करना भी अत्यंत आवश्यक है।

उस अद्‌भुत अनोखे धनुर्धर ने अगले ही पल दतांक को तीन टुकड़ों में बांटकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया—

लेकिन दूसरे ही पल उसे स्वयं भी चकित रह जाना पड़ा—

दतांक जैसी शक्ति ज्यादा समय तक विभाजित नहीं रह सकती क्योंकि...

... उन्हें शत्रुओं का सीना विभाजित करना होता है!

ओह! दतांक अद्‌भुत तरीके से जुड़ गया और अब वह मेरी छाती को निशाना बनाकर मेरी तरफ ही बढ़ रहा है।

...मुझे उससे बचना चाहिए।

ओह!

धनुषा स्वयं तो बच गया, लेकिन अपने धनुष की प्रत्यंचा नहीं बचा पाया—

दतांक ने तेरे धनुष की डोर काट दी है धनुषा...

... अब तेरे जीवन के डोर के कटने की बारी है।

ओह! एक बार फिर उसने अपने घातक अस्त्र को मेरी तरफ उछाल दिया है उसे रोकने के लिए मुझे तीरों की बारिश करनी होगी।...

...और ऐसा करने के लिए धनुष पर चढ़ानी होगी प्रत्यंचा जिसके लिए रथ के घोड़े की यह लगाम एकदम उत्तम रहेगी।

गजब की फुर्ती का प्रदर्शन करते हुए धनुषा ने ना केवल रथ के घोड़े की लगाम खींची...

...बल्कि उसे प्रत्यंचा के रूप में धनुष पर चढ़ा भी लिया और...

...अपने बचाव के लिए तीरों की बारिश भी कर दी–

इसी के साथ धनुषा की मौत बनकर उसकी तरफ बढ़ता दबांक–

वापस लौट पड़ा–

वाह! वास्तव में बहुत अच्छा धनुर्धारी है तू लेकिन जानता है तेरे जैसे धनुष विद्या का प्रयोग कब कर सकते हैं...

...जब उनके हाथ में धनुष हो।

ओह!

दबांक की तेजी के आगे एक बार फिर धोखा खा गया धनुषा और अपना धनुष गंवा बैठा-

लेकिन अतिक्रूर नहीं जानता था कि धनुषा जैसे धनुर्धर अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए किसी साधन के मोहताज नहीं होते। वे तो साधन बना लिया करते हैं—

तू मेरे हाथ से धनुष छुड़ाने में अवश्य सफल हुआ है शैतान, लेकिन अभी मेरी तूणीर सैंकड़ों चमत्कारी बाणों से लबालब भरी है और उन चमत्कारी बाणों में यह नागबाण नामक बाण भी है..

और यह बाण ऐसा है जो आवश्यकता पड़ने पर धनुष भी बन जाया करता है।

हैरतअंगेज तरीके से बाण को धनुष का रूप दे दिया था धनुषा ने—

और उससे छोड़ दिये थे असंख्य बाण—

कुछ ही क्षणों बाद जिसके नीचे दबा नजर आया अतिक्रूर—

इतिहास की पुस्तकों में तेरा नाम अमर हो जायेगा शैतान, क्योंकि विश्व में तू एकमात्र प्राणी होगा, बाणों की समाधि जिसका मुकद्दर बना।

जिसका बचपन पिता के साथ श्मशान में अगणित मुर्दों की लकड़ियों की समाधि में दबाकर उन्हें जलाने में गुजरा हो...

...वह ऐसी तिनकों की समाधियों से निकलना खूब जानते हैं।

??

!!

एक भयंकर रूप धारण कर बाणों की समाधि से बाहर निकला अतिक्रूर—

अब प्रलयदूत बना नजर आने लगा था—

धड़ाम

धाड़

आह्ह

आह्ह

ओह ! इसके भयंकर शरीर पर साधारण बाणों से कोई असर नहीं होने वाला इसे समाप्त करने के लिए तो अब मुझे कई विशेष बाणों का प्रयोग...

...करना होगा ओफ्फ!

भड़ाक

अतिक्रूर द्वारा फेंके गये उस भील से टकराकर जो गिरा धनुषा...

...तो फिर नहीं सम्भल पाया—

तूने मेरे लिए जो तिनकों की समाधि बनाई थी, उससे कहीं ज्यादा शानदार होगी यह समाधि...

...जो तेरे ही साथियों के शवों से बनेगी।

धनुषा को सैकड़ों मृत भीलों के नीचे दबा दिया था उस महाक्रूर ने।

लेकिन शवों की उस समाधि में धनुषा को फंसाकर मारने का अतिक्रूर का अरमान पूरा नहीं हो पाया था।

क्योंकि अपने चमत्कारी बाणों के बल पर धनुषा ने स्वयं को बचा लिया था—

तेजी से घूमकर सुरंग बनाते ये बाण शीघ्र ही मुझे इस मुसीबत से छुटकारा दिला देंगे।

इधर रणभूमि को भीलों की लाशों से पाटने को उतारू था अतिक्रूर—

भड़ाक

आहह

आहह

सूर्यास्त तक उसने भीषण तबाही मचाए रखी—

और यह बात जब घायल भोकाल को पता चली तो क्रोध की अधिकता से मानों उसका एक-एक जख्म चिंघाड़ उठा।

धनुषा जैसे धुरन्धर तीरंदाज को धता बताकर हमारे सैकड़ों साथियों को मौत के घाट उतारने वाली वह शक्ति चाहे जो भी हो मेरे हाथों से नहीं बच सकती...

...आज उसका अंग-अंग कटा पड़ा नजर आयेगा रणभूमि में।

जिस शक्ति को समाप्त करने का दृढ़ निश्चय करके चल पड़ा था भोकाल—

उसे देखते ही वह भौचक्का रह गया—

अतिक्रूर! य...यह तो मेरा मित्र अतिक्रूर है!...

...लेकिन यह इतने भयंकर रूप में कैसे?

और यह मृत्युजीत जैसे पापी के लिए क्यों लड़ रहा है?

मुझे अपने मित्र अतिक्रूर से मिलकर उसे सारी स्थिति समझानी होगी।

जो अतिक्रूर कल तक भोकाल का परममित्र था आज वह उसका परमशत्रु बनकर रणभूमि में आया था—

और यह बात भोकाल को तब पता चली जब अतिक्रूर के हाथ से निकले दतांक ने उसके बढ़ते कदम रोक लिये—

ओह!

एक बार जो भोकाल के कदम रुके—

तो फिर उसने उन्हें दोबारा आगे बढ़ाने की आवश्यकता ना समझी–
मैं तो यह सोचकर आगे बढ़ा था कि वर्षों बाद मिला मेरा मित्र मुझे अपनी बांहों में भर लेगा! अपने हृदय से लगा लेगा!
लेकिन मेरे रास्ते में दतांक फेंककर तूने दिखा दिया कि तेरी बांहें अस्त्रों से भरी हैं। वे मेरी लाश गिराने के लिए मचल रही हैं...
...तेरा हृदय युध्द करने के लिए बेचैन हो रहा है...
...तू मेरा मित्र नहीं शत्रु बनकर यहां आया है और शत्रु से गले नहीं मिला जाता, उसे पराजित किया जाता है।
और युध्द में जीतता है वह जिसकी तलवार काल बनकर लहराती है।
हर काल को अपने सीने पर रोकने की ही नहीं...
...तुम जैसों का काल बनने की भी शक्ति है दतांक में।
तुरन्त ही संभला भोकाल–
या तो तेरे बाजुओं में भरी असीम शक्ति चूक गई है या फिर तुझे उस पर विश्वास नहीं रहा जो चमत्कारी शक्तियों के साथ युध्द लड़ने आया है।
लेकिन फिर भी आज तू अपना कोई भी अरमान पूरा नहीं कर पायेगा...
...क्योंकि तेरी हर शक्ति का मुंह तोड़ जवाब मेरे पास है।
आतेक्रूर इस समय मेरा शत्रु है परन्तु कभी यह मेरा मित्र था इसलिए मुझे इसे मृत्यु देने के लिए नहीं पराजित करने के लिए उससे लड़ना है।

... और इसके लिए मुझे उस पर फेंकने है बिना नुकीले फल वाले ऐसे बाण जो अतिक्रूर को इस रणभूमि से कहीं दूर धकेल दें।...
...बाण उस पर अपना प्रभाव डाल रहे हैं मुझे अपना आक्रमण जारी रखना चाहिए। कुछ ही क्षणों में मैं अपने उद्देश्य में सफल हो जाऊंगा।
अतिक्रूर को बाणों से दूर धकेलने में सफल होने की सोचता भोकाल—
दूसरे ही क्षण अचंभित रह गया-
ओह! नहीं!
कड़ाक
अतिक्रूर का शरीर एकाएक अत्याधिक विशाल हो गया।
इस पर मेरे द्वारा फेंके जा रहे बाणों का कोई प्रभाव नहीं हो रहा। अब इसे बेबस करने का कोई और ही उपाय सोचना होगा...
हा हा हा
हा हा हा
आहऽऽ
...और वो भी अतिशीघ्र क्योंकि वह अपने विशाल पैरों से मेरे साथी भीलों को रौंदे दे रहा है।
भगवान श्रीराम के धनुष धारक को संकट से बचाने के लिए कोई उपाय सोचने में भला कितनी देर लगनी थी-
अतिक्रूर के विशाल शरीर से निबटने के लिए श्रीराम का वह मेघबाण छोड़ना एकदम उपयुक्त रहेगा जो मेघों को नीचे लाकर...
...आपस में टकराने के लिए मजबूर कर देगा...
कड़ाक कड़ाक
...और मेघों के टकराने से जो ध्वनि पैदा होगी वह निसंदेह ही...

...विशाल और लम्बे शरीर वाले अतिक्रूर के कानों के लिए असहनीय होगी।
कड़ाक
कड़क
आहह
सचमुच अतिक्रूर के लिए असहनीय थी मेघों के टकराने की वह आवाज-
पीड़ा से मदमस्त हाथी की तरह लहरा उठा अतिक्रूर का विशाल शरीर—
उसे लगा कि उसके कानों के पर्दे फट जायेंगे...
गड़ गड़ाक
कड़ कड़ाक
आह!
...और वह अचेत होकर गिर जायेगा—
लेकिन कुछ क्षणों बाद जो हुआ वह एकदम विपरीत था-
अतिक्रूर के हाथों में थमा दतांक भी अब विशाल रूप धारण कर चुका था—
और उससे मेघों को दूर भगाने में जुट गया था अतिक्रूर—
भड़ाम
भड़
धाड़
धड़ाक
धड़
जल्दी ही मेघों से छुटकारा पा चुका था अतिक्रूर—
और भोकाल पर अपना प्रहार कर चुका था—
सैकड़ों दतांकों का यह तूफान तुझे हर दशा में मृत्यु का उपहार देगा!
मुझे अपने शरीर पर प्रहार खाने का कोई शौक नहीं...
...यह तो तेरा ही शौक है इसलिए...

... इन प्रहारों को तू ही खाकर अपनी भूख मिटा!

आहह

प्रहारों की किरणों से बने उस मोटे गद्दे से टकराकर सारे दतांक वापस लौटकर अतिक्रूर के ही जा लगे-

चोट से तिलमिलाया अतिक्रूर अब मानों पागल हो गया-

उसने अपने पैरों से जमीन पर ठोकरें मारना आरम्भ कर दिया-

परिणाम जमीन पर मौजूद धूल तेजी से उड़ने लगी...

...जिसने कुछ ही क्षणों में भयंकर बवण्डर का रूप धारण कर लिया-

ओफ्फ! यह धूल।

हमें तो कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा।

ओफ्फ! ऐसे में हम कैसे लड़ेंगे?

रणभूमि में उड़ती हुई धूल जहां भीलों की कमजोरी...

... और राक्षसों की ताकत बन गई-

धूल ने मानवों को विचलित कर दिया है! यही अवसर है समाप्त कर डालो सबको।

आहह आह

मारो मारो

भोकाल के साथियों पर गहरा संकट मंडराने लगा-

जिसे तुरन्त ही ताड़ गया वह महाबली-

इस धूल के बवण्डर को तुरन्त ही समाप्त करना होगा...

... और उसके लिए प्रयोग करना होगा भगवान श्रीराम के तरकश में मौजूद यह बाण...

...जिसे वरुणास्त्र का नाम दिया जाता है।

तुरन्त ही वरुणास्त्र से मूसलधार वर्षा शुरू हो गई—

...जिसने कुछ ही क्षणों में धूल के बवण्डर को बैठा दिया—

इसी के साथ भोकाल के साथी एक बार फिर राक्षसों का काल बनकर टूट पड़े—

जबकि भोकाल—

सदा अपनी भुजाओं और शक्ति पर विश्वास करने वाला अतिक्रूर आज यहां कई विध्वंसक और चमत्कारी शक्तियों का प्रयोग कर रहा है...

इसी से यह बात एकदम स्पष्ट हो जाती है कि अतिक्रूर के पास कोई ऐसी चमत्कारी शक्ति जरूर है जिसने उसे और उसके दस्ताने को विध्वंसकारी रूप दिया है।

...वह शक्ति कैसी है और कहां है, मुझे इसका पता लगाना होगा!...

...वरना मेरे सभी साथियों को रौंद डालेगा अतिक्रूर।

अतिक्रूर में भीषण बदलाव लाने वाली शक्ति की खोज में घूम गईं भोकाल की निगाहें-

एक क्षण बाद ही अतिक्रूर की अंगुली में नजर आती मुद्रिका पर जा पड़ीं—

मैं अतिक्रूर को अच्छी तरह जानता हूं। उसने आज तक कभी भी अपने हाथ में कोई मुद्रिका नहीं पहनी। इसलिए उसके हाथ में जो मुद्रिका मौजूद है वही वह शक्ति है जिसने अतिक्रूर को अत्याधिक क्रूर बना डाला है।

मुझे उस मुद्रिका को अतिक्रूर के हाथों से उतारना ही होगा...

... परन्तु कैसे ? इस समय तो अतिक्रूर के पास भी फटकना मृत्यु को निमंत्रण देने के समान है।

अचानक भोकाल के मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंधा वह विचार—

आतिक्रूर की अंगुली से मुद्रिका उतारने का जो काम मैं या कोई और नहीं कर सकता उसे श्रीराम के तरकश में मौजूद वह बाण आसानी से कर सकता है...

...जो है लक्ष्य भेदी बाण।...

...जिसे छोड़ने में मुझे एक क्षण भी नहीं गंवाना चाहिए।

...जिसे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में क्षणभर भी नहीं लगा—

आतिक्रूर की अंगुली में मौजूद मुद्रिका को निशाना बनाकर भोकाल ने छोड़ दिया वह लक्ष्यभेदी बाण...

एक ही झटके में उस लक्ष्य भेदी बाण ने आतिक्रूर की मुद्रिका के दो टुकड़े कर दिये—

इसी के साथ हो गया वह चमत्कार—

अब सिंह की मानिन्द गरजा भोकाल—

तेरी चमत्कारी शक्ति ने अब तेरा साथ छोड़ दिया है आतिक्रूर! अब देखता हूं कितनी शक्ति है तुझमें और तेरे दताक में?

यह क्या कह रहे हो तुम मित्र भोकाल...

तेजी से सामान्य होता चला गया आतिक्रूर का शरीर--

... अपनी और दलांक की शक्ति तुम्हें दिखाने की तो मैं स्वप्न में भी नहीं सोच सकता!...

...ऐसा करने से पहले मर जाना पसन्द करेगा तुम्हारा यह मित्र!

अतिक्रूर में आये इस हैरतअंगेज परिवर्तन ने भोकाल के साथ-साथ सभी को चकित कर दिया-

शीघ्र ही सभी को उस परिवर्तन का रहस्य समझ में आया—

उस मुद्रिका की वजह से ही मैं अपने प्राणों से भी प्यारे मित्र को स्वयं अपने हाथों से समाप्त करने निकल पड़ा था।

उस मुद्रिका ने मेरे शरीर के साथ-साथ मेरे मस्तिष्क को भी वश में कर लिया था।

मुझे प्रसन्नता है कि अब तुम सामान्य हो चुके हो। निसंदेह ही अब तुम उस पाप के अवतार को समाप्त करने में मेरा सहयोग दोगे। दुर्भाग्य से जो तुम्हारा ही भाई है।

मानवता की भलाई के लिए सदा अपने रिश्ते-नातों को तोड़ा है अतिक्रूर ने। आज भी पीछे नहीं हटूंगा!

मैं तुम्हें वचन देता हूं मित्र! मेरे ही हाथों समाप्त होगा पाप का अवतार बना मेरा मौसेरा भाई...

... मृत्युजीत—

देखा मां! मैं ना कहता था अतिक्रूर मेरी कोई सहायता नहीं कर सकता! देख तेरी आंखों के सामने मेरे शत्रु भोकाल के तलवे चाट रहा है वह!...

अतिक्रूर का भोकाल के साथ मिल जाना ठीक नहीं है पुत्र! उससे भोकाल की शक्ति बढ़ गई है।

बहुत सारे चूहे एक जगह इकट्ठे हो भी जायें तो वे सिंह नहीं बन जाते मां! चूहे-चूहे ही रहते हैं और मेरे जैसा शेर उन्हें एक ही झपट्टे में समाप्त कर सकता है...

...कल देखना मां, तुम्हारा यह अकेला शेर कैसे उन सभी चूहों को समाप्त करके वापस लौटता है।

इधर भोकाल और उसके साथियों को समाप्त करने की...

... और इधर मृत्युजीत को समाप्त करने की तैयारी चल रही थी —

कल युद्धभूमि में अपने साथियों के साथ हम तीनों ने मृत्युजीत और उसकी सेना पर आक्रमण करके इस युद्ध को समाप्त करना है।

ठीक है हम सब अलग-अलग टोली का नेतृत्व करेंगे।

भोकाल, आतिक्रूर, धनुषा और सभी भीलों की सारी रात रणनीति बनाने में बीती —

और अगले दिन प्रातः रणभूमि में —

ओह! इतनी विशाल सेना!

लगता है आज अपनी समस्त सेना के साथ हमसे युद्ध लड़ने आया है मृत्युजीत!

हमारे एक-एक साथी के विरुद्ध शत्रुओं के पचास-पचास सैनिक होंगे।

लेकिन फिर भी मेरे धनुष की धार से बचकर एक भी जीवित वापस नहीं लौट पायेगा।

धनुषा सही कह रहा है साथियो! शत्रुओं का काल बनकर टूट पड़ो उन पर!

तुरन्त ही भोकाल आतिक्रूर और धनुषा के साथ दोनों सेनाएं आपस में भिड़ गईं -

हा हा हा! लड़ो आज खूब लड़ो पराक्रमियो! तुम्हारे लिए ही आज इतनी विशाल सेना लेकर आया हूं मैं।

आज मैं तुमसे नहीं लड़ूंगा। क्योंकि आज मैं रणक्षेत्र में लड़ने नहीं...

... महाकाल का स्मरण करने आया हूं।

रणभूमि में महाकाल का स्मरण करने आने का क्या तात्पर्य हुआ?

पता नहीं, लेकिन इतना जरूर पता है कि जब तक यह महाकाल का स्मरण करके उठेगा इसकी सेना लाशों में बदल चुकी होगी।
ऐसा ही होना चाहिए महाबली...

... लेकिन ऐसा दोपहर होने से पहले होना चाहिए अगर दोपहर हो गई तो फिर तुम कुछ नहीं कर पाओगे!
अरे बाबा! आप?... आप एकाएक कहां चले गये थे?
यह बाद में जान लेना महाबली! पहले यह जान लो कि मृत्युजीत इस रणभूमि में महाकाल को स्मरण करके विध्वंसकारी शक्ति प्राप्त करना चाहता है।

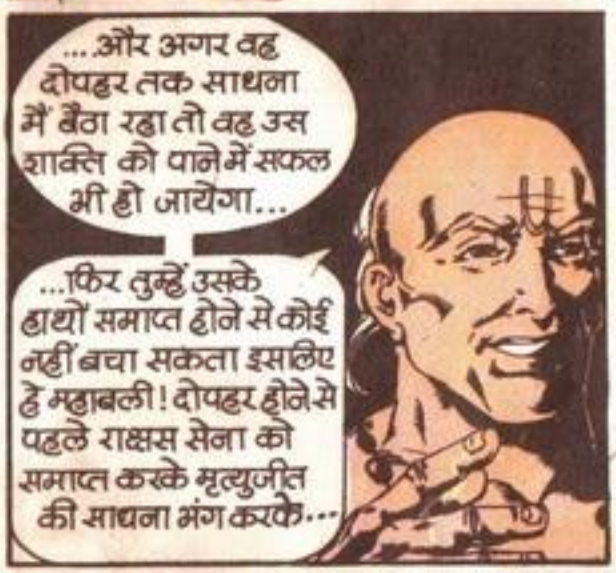
...और अगर वह दोपहर तक साधना में बैठा रहा तो वह उस शक्ति को पाने में सफल भी हो जायेगा...
...फिर तुम्हें उसके हाथों समाप्त होने से कोई नहीं बचा सकता इसलिए हे महाबली! दोपहर होने से पहले राक्षस सेना को समाप्त करके मृत्युजीत की साधना भंग करके...

... और अपने व अपने साथियों के प्राण बचा लो!
अगर ऐसा है बाबा तो दोपहर होने से कहीं पहले राक्षस सेना की लाशों से रणभूमि को पाट देगा भोक्राल।

दतांक से एक-एक शत्रु के सीने को लहूलुहान कर देगा अतिक्रूर!

अपने बाणों से त्राहि-त्राहि मचा देगा धनुषा!

विद्युत की सी गति से तीनों महाबलियों के हाथ आज चमत्कार करने में प्रयत्नशील थे-

और उनका वह प्रयत्न सफल भी हुआ-

सूर्य के सिर पर चढ़ आने से पहले ही-

राक्षस सेना बहुत ही कम बची है। अब इनसे अपने साथी निबट लेंगे...

... हमें निबटना चाहिए इस दुष्ट से!

ओह!

तीनों के प्रहारों ने मृत्युजीत को चौंकाया-

उसकी साधना भंग हो चुकी थी-

इसी के साथ फट पड़ा उसके क्रोध का ज्वालामुखी-

मेरी साधना भंग करके यह मत समझ लेना कि तुम मेरे हाथों काल के मुंह में पहुंचने से बच गये...

... मेरे हाथों तुम्हें वहां तो हर हाल में पहुंचना ही होगा।

काल के गाल में आज हम नहीं तेरी सारी शक्तियां और...

...और तू पहुंचेगा।

धनुषा के धनुष से निकले असंख्य बाणों ने—

मृत्युजीत को हिलने-डुलने लायक नहीं छोड़ा-

हा हा हा! बहुत अच्छी है यह बाणों की कैद, परन्तु यह मुझे ज्यादा देर तक कैद नहीं रख सकती।

मैं इसे कुछ ही क्षणों में तोड़ डालूंगा।

मृत्युजीत के शरीर का चप्पा-चप्पा बाणों से ढक गया था--

लेकिन एक बड़ी समस्या अभी भी अपनी जगह मुंह बाये खड़ी थी और वह समस्या थी-

मृत्यु को जीत लेने वाले मृत्युजीत को समाप्त करने की समस्या—

हा हा हा

यह इसे समाप्त करने का एकदम उचित अवसर है लेकिन समस्या यह है कि इसे समाप्त कैसे किया जाये?...

...इसके शरीर के अंग काटो तो वे फिर जुड़ जायेंगे।

भीषण समस्या है यह?

...और इसका उपाय तुम्हें मैं बता सकता हूं।

सारे दंग वृद्ध को देखते रह गये-

जबकि पूर्ववत् मुस्कराकर बोला वह वृद्ध-

इसके अंग को हजार टुकड़ों में बांटो और आपस में जुड़ने से पहले ही उन्हें पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से बाहर शून्य ब्रह्माण्ड में फेंक दो।

लेकिन उसके शरीर को काटते समय ध्यान रखना...

...तुम्हारे हाथ एक क्षण के लिए भी ना रुकें और मृत्युजीत के रक्त की एक भी बूंद धरा पर ना गिरे।

प्रहारा की शक्ति से बना यह बड़ा कटोरा मृत्युजीत के रक्त की एक भी बूंद का सम्पर्क धरा से नहीं होने देगा।

और प्रलयंकारी दतांक का एकही वार इसके शरीर को सौ-टुकड़ों में बिखेर देगा।

भड़ाक

अतिक्रूर की क्रूरता और उसके दतांक ने दिखाया वह चमत्कार—

लेकिन इसका क्या किया जाये कि सामने वाले का शरीर चमत्कारों का चमत्कार करने में सक्षम था—

ओह! उसके शरीर के टुकड़े तो फिर जुड़ गये!

हा हा हा

बहुत दुष्कर है मेरे शरीर को हजार टुकड़ों में बांटना।

कोई दुष्कर नहीं है क्यों कि इस दुष्कर कार्य को पूरा करने के लिए मेरे पास है यह सहस्राबाण जो धनुष से छूटने के बाद...

...हजार रूप धारण कर लेगा और हजार टुकड़ों में काट डालेगा मृत्युजीत के शरीर को।

सांय सांय

धनुषा के सहस्राबाण की शक्ति का पता अगले ही क्षण चल जाना था।

अगर मृत्युजीत ने एकाएक भीषण रूप ना धारण कर लिया होता—

हा हा हा। जो बाण मेरे छोटे शरीर के लिए घातक सिद्ध होने थे वे इस विशाल शरीर के लिए तिनके के समान हैं। हा हा हा।

ओह!

अब आगे बढ़ा भोकाल—

तेरा शरीर हजार खण्डों में खण्डित होकर ही रहेगा दुष्ट, क्योंकि अब मैं तुझ पर प्रयोग करने जा रहा हूं भगवान विष्णु का वह प्रलयंकारी सुदर्शन चक्र

...जिसने सैकड़ों बार तेरे जैसे पापियों का संहार किया है।

प्रलय की गति से भोकाल की उंगली से निकल पड़ा वह चक्र...

... मृत्युजीत का विनाश बनकर लहराया—

सांय सांय

कुछ ही क्षणों में संभव हो चुका था वह असंभव काम—

मृत्युजीत के शरीर के हजार टुकड़े हो गये मित्रो!

अब मैं करता हूं ऐसा प्रबंध कि ये टुकड़े चाहकर भी आपस में ना मिल सकें।

धनुषा के तीरों ने दिखाया वह चमत्कार—

अद्भुत तरीके से उनसे निकलकर बहुत सी मजबूत थैलियों ने मृत्युजीत के शरीर के टुकड़ों को कैद कर लिया—

अब बस इन्हें पृथ्वी की गुरूत्वाकर्षण शक्ति से बाहर ब्रह्माण्ड में फेंकने भर की देर है।

और इस काम को मैं चुटकियों में कर सकता हूं।

दूसरे ही क्षण थैलियों में बंद मृत्युजीत के शरीर के टुकड़ों को आकाश की ओर उछालने में जुट गया वह बलशाली—

और आन्तिम थैली तक उछालता रहा—

अतिक्रूर की इस असीम शक्ति का वह परिणाम निकला...

...कि सदा के लिए शून्य अंतरिक्ष में विचर रहे थे मृत्यु को जीत लेने वाले मृत्युजीत के शरीर के अंग!

और इसी के साथ पृथ्वी से सदा के लिए उठ गया वह पाप का अवतार—

एक पापी का पृथ्वी से नामो-निशान मिटाने में आप सबने मेरी जो सहायता की है मैं उसका सदा अभारी रहूंगा।

समाप्त

SUMA KASH